2 मीठे बोल

एक खरगोश था। वह घूमता हुआ बाजार में पहुँचा। उसकी नज़र गुड़ की भेलियों पर पड़ी। वह सोचने लगा, ''कितना अच्छा हो मुझे थोड़ा गुड़ खाने को मिल जाए। पर कैसे ? चुरा लूँ। नहीं, नहीं। चोरी करना बुरी बात है क्यों नहीं दुकानदार से माँग लूँ ? वह जरूर गुड़ दे देगा।'' वह दुकानदार के पास गया और बोला, ''आप दयालु हैं। दानी हैं। जीवों पर दया

करते हैं। आपका कारोबार बढ़े। क्या आप मुझे थोड़ा गुड़ देंगे ?''

खरगोश की बात सुनकर दुकानदार खुश हो गया। उसने उसे गुड़ दे दिया। खरगोश खुशी से उछलता हुआ जंगल की तरफ भागा। वह

पेड़ के नीचे बैठकर गुड़ खाने लगा।

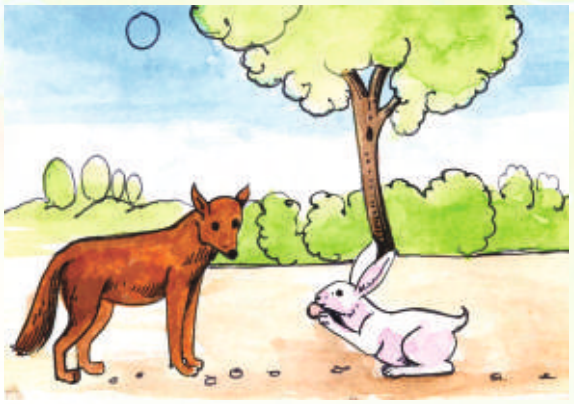

इतने में एक लोमड़ी वहाँ आई। उसको देखकर खरगोश ने गुड़ छिपा लिया। लोमड़ी बहुत चालाक थी। उसने गुड़ को देख लिया था। वह बोली, ''तुम गुड़ कहाँ से लाए ? बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगी।''

खरगोश ने कहा, ''मुझे मत मारो। मैं बताता हूँ। बाजार में एक दुकान पर खूब सारा गुड़ रखा है। तुम वहाँ जाना। दुकानदार से माँग लेना। वह तुम्हें भी गुड़ दे देगा।''

लोमड़ी बोली ,"अब चुप रहो मुझे ज्यादा मत समझाओ ।"

लोमड़ी बाजार की तरफ चल दी। उसने गुड़ का ढेर देखा। गुड़ देखकर सोचने लगी। खरगोश तो मूर्ख है। थोड़ा सा गुड़ लेकर ही वह खुश हो गया लेकिन मैं उसकी तरह निर्बल नहीं हूँ। दुकानदार को धमकाकर बहुत सारा गुड़ ले लूँगी।

वह दुकानदार के पास गई और अकड़कर बोली, दुकानदार, तुम बेईमान हो। सामान कम तोलते हो। मिलावट करते हो। मुझे गुड़ की भेली दो, नहीं तो मैं तुम्हारी

शिकायत करूँगी।''

दुकानदार सोचने लगा, यह लोमड़ी धूर्त है। मुझे धमकी दे रही है। डरा कर गुड़ माँगती है। अभी मजा चखाता हूँ। वह बोला, ''बैठो, बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।''

लोमड़ी खुश हो गई।

दुकानदार अंदर गया। उसने गुड़ का बोरा देखा, जिसमें बहुत सारे चींटे थे। वह उसे उठा लाया और लोमड़ी से बोला, ''लो, इसमें से चाहे जितना गुड़ ले लो।''

लोमड़ी ने झट से बोरे में हाथ डाला। हाथ डालते ही चींटे उसके हाथ पर चिपक गए और काटने लगे। उसने झट से अपना हाथ खींचा और जोर– जोर से जमीन पर पटकने लगी। पटकने से हाथ पर चोट लग रही थी। दर्द भी होने लगा, पर चींटे नहीं छूटे।

वह जंगल की ओर भागते हुए चिल्लाई, नहीं चाहिए तेरा गुड़। तेरा गुड़ तो खारा है।

मीठे बोल, होते अनमोल

निर्देश –बालकों को पात्र बनाकर इस कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत करवाएँ

अभ्यास कार्य

शब्द– अर्थ

दयालु	–	दया करने वाला
दानी	–	दान करने वाला
कारोबार	–	कार्य, व्यापार
निर्बल	–	कमजोर
बेईमान	–	झूठा
धूर्त	–	चालाक
अकड़ना	–	घमंड करना
दर्द	–	पीड़ा

उच्चारण के लिए

निर्बल, धूर्त, दर्द, अकड़कर, अंदर, चींटे, मूर्ख, शिकायत

सोचें और बताएँ

1. खरगोश को गुड़ खाते हुए किसने देखा ?
2. लोमड़ी बाजार की तरफ क्यों गई ?
3. दुकानदार ने लोमड़ी के बारे में क्या सोचा ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (जंगल, धूर्त, निर्बल, मूर्ख)
   (क) मैं उसकी तरह ..... नहीं हूँ।
   (ख) यह लोमड़ी ..... है।
   (ग) वह .....की ओर भागते हुए चिल्लाई।
   (घ) खरगोश तो ..... है।
2. किसने कहा–
   (क) आप बहुत दयालु हैं।

(ख) मैं निर्बल नहीं हूँ।

(ग) बैठो–बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।

3. खरगोश ने गुड़ की भेलियों को देखकर क्या सोचा ?
4. लोमड़ी ने दुकानदार से क्या–क्या कहा ?
5. लोमड़ी की बातें सुनकर दुकानदार ने क्या किया ?
6. दुकानदार के स्थान पर आप होते तो लोमड़ी की बातें सुनकर क्या करते ?

भाषा की बात

पढ़ें और समझें

- पाठ में धूर्त, मूर्ख आदि शब्द आए हैं, इनमें 'र' वर्ण का हलन्त रूप 'र्' आगे वाले वर्ण पर रूप बदल कर लिखा गया है, जैसे– धूर्त का रूप धूर्त हुआ, इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को पढ़ें और समझें।

(क)	धू	+	र्	+	त	(र्त)	=	धूर्त
(ख)	द	+	र्	+	द	(र्द)	=	दर्द
(ग)	मू	+	र्	+	ख	(र्ख)	=	मूर्ख
(घ)	पू	+	र्	+	व	(र्व)	=	पूर्व

- एक बोलें सब लिखें

लोमड़ी ने झट ..... चींटे नहीं छूटे।

यह भी करें–

- कहानी याद करें और कक्षा में सुनाएँ।
- लोमड़ी के स्थान पर आप होते तो क्या करते ?
- हमें क्या करना चाहिए व क्या नहीं करना चाहिए ?

सच बोलें	झूठ न बोलें